

Mahashivaratri Puja

Date	:	6th March 1989
Place	:	Delhi
Type	:	Puja
Speech Language	:	Hindi

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 11
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

इस कलयुग में ईमानदारी से जो काम किया जाता है उसके लिये काफी विपत्तियाँ, आपत्ति, संकट उठाने पड़ते हैं। हालाँकि सबसे बड़ा समाधान ये है कि हम लोग ईमानदार हैं। और सहजयोग में एक बात जाननी चाहिए कि जो चीज़ जिस वक्त बननी है उस वक्त ज़रूर बन जाएगी, उसमें रुकावट नहीं हो सकती। गर कोई रुकावट हुई है तो ज़रूरी थी, गर समय उसमें ज्यादा लग गया या कम लग गया, रुपया अधिक लगा या कम लगा, ये सब ज़रूरी थे। इसलिए किसी भी चीज़ में दोष निकालना नहीं चाहिए, लेकिन उसका आनन्द पूरा प्राप्त करना चाहिए। अब हमें सोचना चाहिए कि दिल्ली में सबसे पहले हिन्दुस्तान का, सहजयोग का आश्रम बनाया गया जो अभी तक सारे भारत वर्ष में कोशिश करने से भी नहीं बना। ये कोशिश अठारह साल से हो रही थी और आज ये आश्रम देखकर मुझे बड़ा आनन्द आया। इसका पूरा उत्तरदायित्व आप लोगों ने लिया था और सारा श्रम आपने किया और इसका श्रेय भी, सारा Credit भी आप ही को है। जब आप लोग मुझे किसी चीज़ का श्रेय देते हैं तो मेरी समझ में नहीं आता है कि आप लोग इतने अकर्म में उतर गए हैं कि आप जानते ही नहीं कि सब आप ही कर रहे हैं। अगर सब काम मुझसे ही होता तो मुझे आपको जोड़ने की क्या ज़रूरत पड़ जाती? आप ही मेरे हाथ हैं, आप ही मेरे आँख हैं, और आप ही मेरे कान हैं। आपके बगैर मैं कोई भी कार्य नहीं कर सकती और इसके लिए मैं आपके शरणागत हूँ एक तरह से, कहती हूँ कि जब भी आप लोगों को मेरे लिए हुकुम हो उस जगह मैं हाज़िर हो जाऊंगी और जहाँ कहोगे वहाँ मैं स्थापित हो जाऊंगी। लेकिन इसमें आपका जो हमारे ऊपर अधिकार है वो बना रहना चाहिए, वो पूरी तरह से बना रहना चाहिए और जब वो अधिकार बना रहता है तो उस अधिकार की पूर्ति भी बहुत आसानी से हो जाती है। अब मुझे तो पता नहीं मैंने इसमें कितना रुपया दिया कि क्या दिया? ये तो सारा सहजयोगियों का रुपया है, मेरी जेब से तो मैंने एक पैसा नहीं दिया। लेकिन मैं अपनी जेब से भी देना चाहती हूँ क्योंकि मेरे लिए भी तो आप यहाँ कमरा बना रहे हैं। तब थोड़ा सा मुझे भी तो पैसा देना चाहिए। आप लोग तो बना ही

रहे हैं लेकिन मुझे भी तो कुछ देना चाहिए।

सहजयोग एक आनन्द का पर्व है, एक आनन्द का सागर है। हर चीज़ में आपको आनन्द गर मिले तो सोचना चाहिए कि आप सहजयोग की संवेदनशीलता को प्राप्त करते हैं। लेकिन आपमें वो आनन्द, उसकी प्रचीति न हो तो सोचना चाहिए कि आपमें अभी कमी रह गई है। इसको बनाने में जो कुछ भी कष्ट हुआ हो, जो कुछ भी परेशानियाँ हुई हों और जो कुछ भी आपको उठाना पड़ा हो, ये सब कुछ एक खेल है, ये सब एक खेल है और इस खेल को हमने किस तरह से खेला, उसका मज़ा हमने उठाया। घर बनाना, दुकान बनाना, विश्व बनाना, ये सब एक खेल है। गर आप विश्व के बनाने पर ये सोचें कि कैसे बनेगा, क्या होगा तो उसका मज़ा ही खत्म हो जाएगा। लेकिन आप बना रहे हैं, आप देख रहे हैं, किस तरह से बना रहे हैं और किस तरह से इस चीज़ को बनाइएगा। सिर्फ आपका चित्त गर स्वच्छ हो जाए, चित्त शुद्ध हो और चित्त में यही प्यार हो कि कोई चीज़ करनी है और ये परमात्मा के कार्य के लिए हम कर रहे हैं तो आनन्द द्विगुणित हो जाता है। और भी बढ़ जाता है, इसकी लहरें और भी आपको लपेटती चली जाती हैं और आप बड़ी गहरी ऐसी एक अनुभूति में जाते हैं जहाँ पर जाकर आप कहते हैं कि 'अब मस्त हुए फिर क्या बोलें?' वही हाल आज मेरा हो रहा है। ये सारा देखकर के, वैसे तो सारा विश्व ही बनाया है लेकिन ये जो अभी बनाया है, जैसे गुड़िया के खेल में जब आप उस गुड़िया का छोटा सा घर बनाते हैं उसको देखकर का बड़ा अद्भुत सा आनन्द होता है। ऐसा ही विश्व में बसा हुआ ये हमारा आश्रम है जिसके प्रति मुझे वही एक अनुभूति प्रतीत हो रही है।

आज का दिवस भी बड़ा शुभ है कि आज शिवतत्त्व के दिन, जिस दिन हमारे अन्दर शिवतत्त्व तत्त्व प्रगटित होता है, वो आज का दिन है। जिस दिन शिवजी की पूजा की जाती है। शिव माने जो अटूट, अचल, अविनाशी और आज के दिन कोई ऐसी चीज़ बन गई जो अटूट, अचल, और अविनाशी-इन तीन स्तम्भों को प्रकाशित करने वाली है, ये तो एक सारे संसार के लिए बड़ी सौभाग्य

और बड़ी मुश्किल बात है। इसे हम लोग इस तरह से समझें कि सारे विश्व में हलचल और दुनिया भर की आफत, ये कलयुग की घोर यातनाएं और उसका प्रकाश तांडव चला हुआ है। ऐसे वक्त एक लेखना कोई होनी चाहिए जिसको हम पकड़ लें। उस लेखना के लिए एक गणेश तत्व को बिठाना होगा। उस गणेश तत्व को बिठाने के लिए कोई न कोई पृथ्वी तत्व पे चीज खड़ी करना पड़ती है। उसी प्रकार आज गणेशतत्व यहाँ बसाया गया, एक पवित्रता यहाँ लाई गई। ये एक पवित्र मन्दिर सा बन गया है और यहाँ से पवित्रता सारे संसार में कूद सकती है और उसका जो कुछ भी कार्य है वो बहुत सुचारु रूप से हो सकता है। हर तरह का आक्रमण, आततायी लोगों को ये एक छोटा सा दिखने वाला आश्रम ही बहुत कार्य कर सकता है। तो जिसे कहते हैं कि nucleus इस तरह से ये एक भारतवर्ष में आज दिल्ली में शुरू हुआ है। सर्वप्रथम संसार में जो चीज बनाई गई वो है श्री गणेश। लेकिन उनसे भी पहले और आदिशक्ति से भी पहले जो तत्व था उस तत्व को हम ये कहेंगे कि वो सदाशिव स्वरूप, सदाशिव था। उस सदाशिव तत्व से ही उनकी जो शक्ति आई उसे हम आदिशक्ति कहते हैं। तो सबसे पहले जो चीज संसार में रही और रहती है और हमेशा रहेगी, वो चाहे सुप्तावस्था में होती है तब कोई सा भी सृजन (Creation) नहीं होता है, 'लेकिन जब वो जागृत अवस्था में रहती है तब सारा सृजन होता है। उस वक्त हर तरह का सृजन आते रहता है। फिर उसके बाद, अवतरण आते हैं और सब तरह के कार्य होते हैं और फिर वही जा करके चीज जब सो जाती है तो सब चीज फिर सुप्त अवस्था में चला जाता है। तो ये जो सुप्तावस्था में जाने की स्थिति है उस स्थिति से पहले ही हम लोगों को उस जागरण में उतरना चाहिए जो शिवतत्व है।

शिव का तत्व समझना एक हिन्दुस्तानी के लिए कठिन बात नहीं है क्योंकि अपने यहाँ, भारत वर्ष में जो कि भारतीय हैं, जो कि विदेशी लोग हैं या विदेशी संस्कृति से प्रभावित हैं उनकी बात नहीं, पर सर्वसाधारण किसी भी भारतीय को आप गर देखें तो वो यही कहेगा कि इस अविनाशी तत्व को ही पाना हमारे जीवन का लक्ष्य है। बाकी सब चीजें विनाशी हैं। ये हम लोग जानते हैं। सारी चीजें

विनाशी हैं और विनाशी चीजों के पीछे दौड़ना ये कोई भी अक्ल की बात नहीं है। विनाशी चीजें जहाँ हैं वहाँ हैं, अपनी सीमा में रहें। लेकिन उनका ज़रूरत से ज्यादा महत्व करना विनाश की ओर जाना है। यही चीज है जो शिवतत्व है इसे हमें प्राप्त करना है, जो सारी हमारी कार्यपद्धति, गतिविधियों का लक्ष्य भी है और वही हमारा केन्द्रबिन्दु और स्रोत भी है। यही चीज विदेश के लोग भूल गए हैं। विदेश में लोग विनाशी चीजों को बहुत महत्व देते हैं, और विनाशी चीजों के लिए भागते हैं, उसी को महत्वपूर्ण समझते हैं और उसी को सोचते हैं कि उसी से हम सब लाभ कर सकते हैं। उनको अविनाशी की शायद खबर भी नहीं, बहुत से लोगों को, और जिनको है वो भी बस उसको विचारों में, और तत्वों में और इस चीज में बाँधकर के एक बड़ा भारी सा, कहना चाहिए, कि कबन्ध सा बना देते हैं। लेकिन उसमें जान नहीं है, उसमें प्राण नहीं है, उसके जो प्राण हैं, वो है शिवतत्व। और शिव तत्व जो है वो हम लोगों को मालूम है और हम जानते हैं कि इस अविनाशी शिवतत्व से ही सारा कार्य होने वाला है। गर हमारा मस्तिष्क, गर किसी तरह से काम से चला जाए तो भी हम जिन्दा हैं, गर हमारा हाथ टूट जाए तो भी हम जिन्दा हैं, गर हमारा पैर टूट जाए तो भी हम जिन्दा रह सकते हैं, रीढ़ की हड्डी भी टूटने पर हम जिन्दा रह सकते हैं। पर जैसे ही हृदय बन्द हो जाता है जहाँ शिव का तत्व है, फिर हम संसार में नहीं रह सकते।

तो शिव के तत्व के बारे में हमें जानना चाहिए कि यह तत्व अत्यन्त भोला है। भोलेपन का ये मतलब नहीं कि मूर्ख, भोलेपन का मतलब है पवित्र, अत्यन्त पवित्र है। जैसे कि एक पवित्र चीज आपने यहाँ बिछा दी हो कुछ भी, इस पर एक छोटा सा भी दाग लग जाए तो फौरन दिखाई दे जाएगा। इसी प्रकार शिवतत्व का है कि जैसे ही थोड़ी सी भी गलती करते हैं तो शिवतत्व के प्रकाश में वो एकदम साफ दिखाई देती है। और अब इस शिवतत्व को अगर आप ऐसा समझिए कि हमारे जीवन में इस शिवतत्व का क्या उपयोग है तो जो आज आप चैतन्य को जानते हैं या चैतन्य की आपमें जो अनुभूति होती है ये ही शिवतत्व का प्रकाश है और जब तक शिव आपके अन्दर जागृत नहीं होते, जब तक आत्मा आपके अन्दर जागृत नहीं होती आप

इस शिवतत्व को प्राप्त नहीं कर सकते, उसकी प्रचीति नहीं कर सकते, उसे जान नहीं सकते। उसकी प्रचीति होना ही एक बोध है, इसी को विद् कहना चाहिए जो वेद है। इसी को Knowledge कहते हैं जो ज्ञान है। यही शिवतत्व को जानना चाहिए। अब शिवतत्व है या नहीं ये तो आप जानते हैं, इसमें आपको शंका नहीं है कि शिवतत्व है या नहीं। किन्तु शिवतत्व पे हम जमें हैं या नहीं, ये सोचना चाहिए। शिवतत्व का सबसे बड़ा फायदा ये है कि ये प्रेम है, प्रेम का स्रोत है, प्रेम का लक्ष्य है प्रेम का केन्द्र है, ये प्रेम है। सबसे बड़ी चीज़ आप अपने हृदय को खोल लें, शिवतत्व को अपने अन्दर समाने का मतलब है अपने हृदय को खोल लो। हृदय को खोलकर के बिल्कुल खुली तबियत से रखें। इसके विरोध में क्या-क्या चीज़ें बैठती हैं वो हमें देखना चाहिए। इसके विरोध में जब हमें एक तो स्वार्थ 'मैं', ममत्व, 'मैं', मेरा पति, मेरे बच्चे, मेरा घर' जहाँ ममत्व शुरू हुआ वहाँ शिवतत्व खत्म होने लगता है। अब शिवजी को देखिए कहाँ रहते हैं? कैलाश पर, जहाँ कोई भी नहीं रह सकता, वहाँ बसे हुए हैं। कपड़े क्या पहनते हैं वो तो आप जानते ही हैं। अलंकार उनके क्या हैं और जिस मस्ती में वो पहनते हैं वो भी आप जानते हैं। लेकिन उनको कोई आराम की ज़रूरत नहीं, कि मुझे कौन सा आराम मिलेगा। हम लोग पहले सोचते हैं-भई वहाँ जा रहे हैं तो वो कितने स्टार होटल हैं, वहाँ क्या इन्तज़ाम होगा, वहाँ ये चीज़ ठीक होगी या नहीं होगी, वहाँ किस तरह से रहने को मिलेगा, वहाँ कौन सा इन्तज़ाम होगा और किस तरह से खाना होगा? वो इस चीज़ की परवाह नहीं करते। शिव तत्व वालों का पहली पहचान है, वो मस्ती में कहीं भी रह सकते हैं। आप उनको जंगल में सुला दीजिए, वो जंगल में आराम से हैं, महलों में रख दीजिए तो महलों में आराम से हैं। जहाँ है वहाँ वो शिव हैं। उससे ऊँची कोई चीज़ है ही नहीं जिसका वो आनन्द उठा सकें क्योंकि स्वयं आनन्दमय होने की वजह से और किस चीज़ से आनन्द उठाना है? बाकी तो सब कचरा ही है। जो असली परम चीज़ है वो उन्होंने पाई है अपने अन्दर में, शिव की और उस शिव के आनन्द में ही वो पूरी तरह से जमे हुए हैं। तो उनके लिए ऐसी कौन सी विशेष चीज़ होगी जो उनको दबा सकेगी या उनको मोहित कर

सकेगी? ऐसी कोई सी भी चीज़ उनके लिए नहीं है। इसी से आप जान सकते हैं कि गर हमारे अन्दर शिव तत्व चलता है तो पहले तो हम ऐसे इन्सान हो जाते हैं जिसे कहते हैं, औलिया- माने आप कहीं भी सो लीजिए, कहीं भी बैठ लीजिए, कहीं भी खाना खा लीजिए, किसी वक्त भी खाना खा लीजिए, कितना टाइम है सोलें और ये घड़ी जो है ये बन्द हो जाती है, क्योंकि आप कालातीत हो गए, किस वक्त जाना, किस वक्त आना, किस वक्त क्या करना, उसका विचार ही नहीं रहता। सब ये कि हो रहा है। जो भी चल रहा है ठीक है। अभी यहाँ बैठे थे यहाँ बैठ गए, कल को वहाँ जाकर बैठ जाएंगे। उसमें ये विचार ही नहीं आता है कि अब Time हो रहा है चलो, अब वहाँ पर ऐसा करना है ये करने का है, ये सब दिमागी जमाखर्च उसमें होते ही नहीं। क्योंकि जो हो रहा है वो कालचक्र के हिसाब से ठीक ही हो रहा है। इसीलिए मैंने कहा कि ये कब बनेगा, कैसे बनेगा, उसके लिए व्याकुल होने की ज़रूरत नहीं। जब इसके लायक लोग हो जाएंगे तब ये पूरा हो जाएगा। जब इसमें रहने लायक लोग हो जाएंगे, तब ये पूरा होगा, नहीं तो यहाँ पर क्या, कौन रहेगा? जानवर आकर रहेंगे, चिड़िया पंछी रहेंगे? मैंने तो इनसे कहा था कि पहले ये तय कर लो दिल्ली वाले कि कौन रहने वाले हैं यहाँ आकर। कहने लगे माँ आप तो रहेंगे। मैंने कहा मैं कौन-से-कौन से आश्रम में रहने वाली हूँ? ये बता दीजिए। तो एक मेरे लिए मत आश्रम बनाओ, आपमें से कितने लोग आश्रम में रहना चाहते हैं, ये पहले तय कर लो। क्योंकि हिन्दुस्तानी तो बहुत ही ज्यादा सीमित हैं। उसको तो अपना घर चाहिए, अपनी बीवी चाहिए, अपने बच्चे चाहिए और बीवी पर रौब जमाने के लिए चाहिए। ऊपर से ये कि उनको मोटर चाहिए अपनी। 'अपना' 'मेरा'। ये मेरी, ये मेरी चीज़ है, मेरे बच्चे मेरे पास हैं, मेरी बीवी मेरे पास है। कितने लोग ऐसे हैं कि जो सामूहिक तरह से रह सकते हैं दुनिया में? परदेस में ये प्रश्न नहीं उठता।

परदेस में तो गर आश्रम बनाया तो खट से बन जाता है क्योंकि सब अपना बिस्तर वगैरा लेकर के चले आते हैं। भई क्या हुआ? अब तो घर-वर बेच दिया, अब तो माँ आश्रम में रहेंगे। अब हमारे सारे प्रश्न ही छूट गए क्योंकि अब न तो घर का किराया देने का, न कोई आफ़त, न कोई चीज़। बस

अब यहाँ रहेंगे, सामूहिक में रहेंगे, जो कुछ पैसा देना है वो देंगे और अपना आराम से रहेंगे। सब लोग मिलकर काम करेंगे, और कोई Problem ही नहीं। कोई आफत आई तो सब लोग मिलकर उठा लेंगे और कोई ऐसी विशेष बात हुई तो उसका भी आनन्द सब लोग उठा लेंगे। वो लोग तो इतने खुश हो जाते हैं कि इसमें हमें कुछ मिल गया, जैसे कि हम किसी चीज के हो गए, जिसको कहते हैं belonging, किसी चीज को हम belong कर गए। और हम लोग हैं चिपटे-चिपटे घूमे रहते हैं। अच्छा उस घर में भी, घर के अन्दर भी, फिर झगड़े शुरू होते हैं कि साहब ये बड़ा लड़का है, ये छोटा लड़का है, ये बड़ी बहू, ये छोटी बहू। फिर उसका बच्चा, फिर मेरी बहन, फिर ये, ठिकाना। उसमें भी झगड़ा। क्योंकि ये जो रिश्तेदारी है कृत्रिम रिश्तेदारी है, ये असली रिश्तेदारी नहीं। कोई किसी का बेटा हो जाए तो उससे उसका रिश्ता नहीं होता। गर होता, रिश्ता गर बनता तो झगड़ा क्यों होता? मतलब इसमें वास्तविकता नहीं है। उसमें फिर छोटी-छोटी बात की मांग क्यों होती? एक दूसरे में प्यार क्यों नहीं होता? तो जिस तरह से हम आपको कहते हैं कि बाहर के धर्म सब झूठे हैं इसी तरह से बाहर के रिश्ते भी सब झूठे हैं। एक-एक आदमी को इसकी प्रचीति आएगी। अब कोई कहेगा साहब मेरी माँ को बुला दीजिए, माँ को बुला दीजिए। लन्दन में हम थे तो एक साहब मेरी जान के पीछे पड़ गए। मैंने कहा अच्छा भई तुम इतने पीछे पड़े हो तो माँ को बुला देते हैं। जब माँ को बुला दिया तो वो रोज़ कहें माँ इससे मुझे छुटकारा करें, मेरी जान खा गई है। इसको कैसे भगाऊँ? मैंने कहा पहले तो कह रहे थे माँ को बुलाओ, माँ को बुलाओ, मेरी जान खाली, अब ये कि इसको यहाँ से निकालने की कैसे कोशिश करें। मैं कैसे इसको निकाल दूँ, मेरा सर खा लिया। मैंने कहा, पहले बुलाया क्यों और अब भेज क्यों रहें हैं? वजह ये है कि ये जो रिश्ता था ये रिश्ता सच्चा नहीं था, ये झूठा रिश्ता था। अगर सच्चा रिश्ता होता तो एक प्रेम में विभोर मनुष्य रहता। उसमें ये नहीं भावना आती कि ये मेरा है। 'मेरा' की जो भावना है ये झूठी भावना है, ये सच्ची भावना बिल्कुल नहीं है। गर सच्ची भावना होती तो आप मुझे बताइए कि कौन सी रिश्तेदारी में आपने देखा है कि एक आदमी को शिकायत हो जाए तो

सारे लोग उसके साथ खड़े हो जाएंगे। उल्टे गर आप सहजयोग में आएँ तो आपकी टाँगें खींचेंगे। अच्छा गर आप सहजयोग में आएँ तो आपसे कहेंगे कि चलो फिर हमें ठीक कराओ। तुमने हमें ठीक नहीं कराया तो हम तुम्हें सहजयोग में नहीं जाने देंगे। फिर और भी तमाशे खड़े कर लिए। क्योंकि शिवतत्त्व ही सत्य है, बाकी सब असत्य है और शिवतत्त्व का रिश्ता आप जानते हैं, वो चैतन्य से होता है। इस प्रकार से जब आप चैतन्य को महसूस करते हैं, आप जानते हैं कि चैतन्य है तो आप समझ लेंगे कि ये जो दूसरा सामने बैठा है इससे कितना कितना आनन्द आ रहा है। एक बार कलकत्ते में एक साहब मेरे पास आए। वो मेरे पैर पर आते ही साथ आठ-दस वहाँ जितने भी सहजयोगी थे दौड़ पड़े! मैंने कहा, क्या हुआ है? पता नहीं क्या? एकदम से कुण्डलिनी चढ़ गई एकदम खुल गई। हमने कहा जाकर देखे माँ को क्या हुआ? तो ये देखा कि सामने एक realized soul। अब वो सब खड़े हो गए वो बिचारा झुका ही बैठा था मैंने कहा उसको तो छोड़ो। पकड़ लिया उसको। उसका जो आनन्द आ रहा था जैसे कि गुलाब के फूल से भी न आए, न कमल के फूल से आए, ऐसे उसका मजा उठा रहे थे। ये असली रिश्ता हुआ कि बैठे कहाँ थे, वहाँ से भागे-भागे आए। क्या मजा आया! जब ये मजा आने लग गया तब रिश्तेदारी है। यही असली दोस्ती है, यही असली सहजयोग की प्रेरणा, प्यार और उसका आनन्द है। ये सिर्फ शिव तत्त्व से मिल सकता है। गर आपके अन्दर शिव तत्त्व है तो आप आपस में झगड़ ही नहीं सकते। आपने गणों को देखा है कि गण कैसे होते हैं कि वो एक इशारे पे कठिन से कठिन काम सब लोग मिलकर करने लग जाते हैं, कठिन से कठिन बात हो, उसमें सब जुटकर के करने लग जाते हैं। लेकिन गर हमारे यहाँ शिवतत्त्व की जब पूर्ण प्रणाली शुरू हो जाती है, मैंने देखा है, कि गर समझ लीजिए कोई चीज़ अमेरिका में हो गई तो सारे सहजयोगी उधर दौड़ पड़ेंगे। कोई घटना आस्ट्रेलिया में हो गई, सबका चित्त वहाँ चला जाएगा। कितनी बड़ी बात है! लेकिन सबसे पहले उसमें हमें जानना चाहिए कि हम शिवतत्त्व में स्थित हैं। शिव तत्त्व में स्थित होना माने मैं नहीं कहती कि आप सन्यासी बाबा बन जाएँ। पर अन्दर से सन्यस्थ भाव आना चाहिए। अन्दर से सन्यस्थ भाव आने का

अर्थ ये होता है कि आप इस तरह से कि एक पेड़ के अन्दर उसकी शक्ति या उसके अन्दर का जो Sap होता है वो उठता है और हर जगह जाता है, हर पत्ती पर, हर शै पर, हर फूल पर, हर फल पर जाता है और फिर लौट जाता है। इसी प्रकार आपका भी प्यार बिल्कुल निर्वाज्य, पूरी तरह से असंग में, detached होना चाहिए। तब आप शिवतत्व में स्थित होंगे। और जब वैसे आप हो जाते हैं तब आपको एक दूसरे का मजा आने लगता है, नहीं तो एक दूसरे को देखकर के, वो ऐसा बोले, इन्होंने ऐसा किया। शुरु-शुरु में तो ऐसा लगता था कि मैं किसी झगड़ालू घर में घुस गई हूँ। इसका उसका आपस में झगड़ा, न किसी को आपस में मजा आ रहा है, न कोई आपस में प्यार कर रहा है। इसका झगड़ा उससे, उसका झगड़ा उससे, मैं तो देख-देख के सोचती थी हे भगवान! अब मैं क्या करूँ? यहाँ कुछ मेरा कार्य तो बनना ही नहीं। लेकिन धीरे-धीरे, धीरे-धीरे दिमाग ठण्डे हो गए, शिवतत्व अंदर स्थापित होने लग गया और अब लोग आपसी प्रेम को आनन्द से भोग रहे हैं और जान रहे हैं कि आपसी प्रेम जो है यही सबसे बड़ी चीज है। और रिश्तेदारों का भी अनुभव आने लग गया कि ये क्या चीज है। अपना रिश्ता एक ही चीज से होता है वो है शिवतत्व से। जिस आदमी में शिवतत्व नहीं, जिस आदमी में vibrations नहीं, जिसके vibrations ठीक नहीं हैं उस आदमी से आपका रिश्ता हो ही नहीं सकता। कितनी भी कोशिश कर लो, तो भी वो रिश्ता बन नहीं सकता। उसको जब तक उसके vibrations ठीक नहीं हो जाएंगे तब तक आप कुछ भी कर लें, आपको उसके साथ मजा आ ही नहीं सकता। या तो आपके ही vibrations खराब हो जाएंगे या उसके vibrations खराब हो जाएंगे। तो आपको ऐसा लगेगा कि इसी के vibrations खराब हैं तो क्या मेरे खराब हो गए? और मेरे खराब हैं तो क्या उसके खराब हो गए? और एक तरह से संभ्रान्त, भ्रान्तिमय स्थिति आ जाएगी। आपको ये ही समझ में नहीं आएगा कि vibrations किसके खराब हैं? तो इसलिए ऐसे आदमी जिनके कि vibrations ठीक नहीं हैं उनसे दूर रहना चाहिए। उसमें कोई किसी को बुरा नहीं मानना चाहिए, उसमें दोनों का लाभ है। गर आपके अन्दर शिवतत्व जागृत है तो आप उनसे अलिप्त रहिए। इसका मतलब ये नहीं

कि आप उनको धुत्कारिए या बुरा कहिए, लेकिन उनका भी शिवतत्व ठीक करना चाहिए और उनसे भी कहना चाहिए कि आप अपने शिव तत्व को ठीक करें, क्योंकि गर ऐसे लोग बीच में आ जाएं तो उसमें कभी भी आनन्द नहीं आ सकता जैसे कि कोई कहे कि दूध में आप दही डाल दें। क्या हर्ज है? हम सब तो detached ही हैं, ऐसे तो होता नहीं। दूध में आपने दही डाल दिया तो दही हो जाएगा। आप कितनी भी कुछ Theory लगाओ, उस Theory का काम नहीं। उसके सामने जाकर प्रार्थना करो, नमस्कार करो, कुछ करो, दूध में आपने दही डाल दी और जिन लोगों के vibrations खराब हैं उनको पूरी तरह से guidance देना चाहिए। तुम्हारे vibration ठीक हो जाएंगे और सब ठीक हो जाएगा और आपकी शान्ति आपके शिवतत्व से वो देखकर कहेंगे, "हाँ ठीक है।" ये आदमी कितना शान्ति में बैठा है मैं भी ऐसी शान्ति में बैठूँ। इस शान्ति को मैं क्यों न पाऊँ? उसका मैं क्यों न उपभोग करूँ? इस तरह का आपका जीवन उस शान्ति में, सादगी में, प्रेम में जब घुस जाएगा तो दूसरे लोग जिनके vibrations ठीक नहीं हैं, जो इतने अभी बैठे नहीं हैं सहजयोग में, वो धीरे-धीरे बैठ जाएंगे।' लेकिन सबको यही कोशिश करनी चाहिए कि हमारा हित काहे में है, हमारा हित इस तरह से पागल जैसे घूमने में और भटकने में नहीं। उस अविनाशी चीज को प्राप्त करना ही हमारे जीवन का लक्ष्य है। हम इसीलिए सहजयोग में भी आए हैं और सहजयोग में आकर के अगर हम आधे-अधूरे रह गए तो क्या फायदा? हमने क्या प्राप्त किया? उसमें हम जिस रास्ते पर आए हैं हम बीच ही में बैठ गए, मंजिल तक तो पहुँचे ही नहीं। इस शिवतत्व के बारे में मैंने अनेक बार बातें करीं हैं और बताया लेकिन दिल्ली वालों के लिए विशेष रूप से शिवतत्व की बात कहनी चाहिए। सो शिवतत्व की बात ऐसी है कि आपको पता होना चाहिए कि जब हृदय आपका पकड़ जाता है तो आपका आज्ञा चक्र पकड़ जाता है। पर मैं तो उल्टे कहूँगी, गर आपका आज्ञा चक्र पकड़ गया, सामने का, तो आपका हृदय एकदम से संकुचित हो जाएगा, एकदम छोटा हो जाएगा। और जब आपका आज्ञा चक्र खुल जाएगा तो आपका हृदय एकदम ठण्डा ठण्डा उसमें से बहने शुरु हो जाएगा। आज्ञा चक्र चढ़ता है अहंकार से। क्योंकि

आप इस राजधानी में रहते हैं और सब घोंड़े पर सवार लोग हैं, आप भी सोचते हैं (बच्चों को जरा-पता नहीं क्यों बच्चे रो रहे हैं इनको देखना चाहिए जो बच्चे रो रहे हैं उनको देखना चाहिए) सो दिल्ली शहर में मेरी जब शादी होकर आई तो मुझे लगा कि ये कोई अजीब दुनिया है। यहाँ लोग चलते तो जमीन पर हैं परन्तु गर्दन उनकी ऊपर ही चलती है ऐसे, और आप जब-तक कूदकर उनसे बात नहीं करिए उनको कुछ समझ में नहीं आएगा। एक अजीब अहंकार की दुनिया थी, बापरे, जब उस Time में जब देखा, मैं बहुत छोटी सी और भोली सी थी, मुझे हँसी आती थी कि ये सब पागल लोग जा कहाँ रहे हैं। सीधे जमुना जा रहे हैं, किसी घाट पर जा रहे हैं, कुछ समझ में नहीं आता था। तो मैं देखा करती थी और मुझे बड़ा आश्चर्य होता था, सबकी गर्दन, यहाँ से उठकर छः फुट चलती थी और इसका कारण ये कि अहंकार, इतना अहंकार। एक चपरासी की गर बीबी घर में आए तो वो शनील के सूट पहनकर के, लिपस्टिक विपस्टिक लगा करके पहुँची घर में, मैंने सोचा कोई मेमसाहब हो होगी। नाखून रंगाए हुए, लिपस्टिक लगाए हुए, चूड़ियाँ पहनी हुई बिल्कुल फैशनेबल। और मैं तो उसके सामने बिल्कुल ही गाँव की औरत लग रही थी। तो मैंने सोचा कोई मेमसाहब होगी। तो मैंने उनसे कहा चाय लो, सोफे पे बिठा दिया और वो बैठे न, मैंने कहा, आप बैठिए न, बैठिए न। कहने लगी, मैं कैसे बैठ सकती हूँ? मैंने कहा क्यों आप हैं कौन? मैं आपके चपरासी की बीबी हूँ, तो मैंने कहा, कोई हर्ज नहीं है, बैठ जाइए अब आप। और फिर जितनी उसमें घमण्ड थी, मैंने देखा कि उतनी तो Collector के नहीं होती। तो मैंने कहा कि जब इनका ये हाल है तो कलेक्टर की बीबी क्या होगी! और इस कदर अहंकार और झूठ और इतनी कृत्रिम जिन्दगी कि मैं तो नागपुर से आई थी, तो लगा कि ये है दुनिया, कैसी दुनिया है ये, कुछ समझ ही में नहीं आ रहा। अजीब-अजीब से अनुभव आने लगे। जैसे हमारे पति आए, वो शास्त्री जी के साथ थे। ऐसा दुनिया में तो बड़ी भारी नौकरी, मुझे तो समझ में नहीं आता इसमें क्या बड़ा भारीपन है? तो एक हमारी सहेली हमें मिली, सो वो हमारे कॉलेज में पढ़ती थी। वो तो हमसे बात ही नहीं कर रही। तो मैंने कहा कि नमस्ते वमस्ते किया। तुम कहाँ रहती हो?

तब हमें एक मीनाबाग में एक जगह मिल गई थी, कहने लगी मीनाबाग में रहती हो? तुम्हारे पति क्या करते हैं? भई कुछ करते ही हैं सरकारी नौकरी ही है, ऐसा ही after all। ये मीनाबाग में तुम रहती हो, किससे शादी कर ली तुमने? तुमको और कोई नहीं मिला? मैंने कहा भई मेरे पति तो बहुत अच्छे आदमी हैं बहुत अच्छे। अरे उसको क्या चाटना है? तुम क्या मीनाबाग में रहती हो? मैंने सोचा कि इसको सारी दुनिया में कौन कहाँ रहता है, किसकी क्या Position है, उसको सब पाट याद है कि कहाँ रहते हैं। मैंने कहा कि तुम कहाँ रहती हो? कहने लगी, मैं तो वहाँ रहती हूँ राउजएवेन्यू में। मैंने कहा वो कहाँ है? तो वो पुल के पास है। मैंने कहा, तो वो दूर होगा न जरा यहाँ से। अरे तो क्या मेरे पास मोटर है, उसमें क्या है, कहीं भी हो, रहते तो शान से हैं। मेरे पति तो ये हैं, मेरा पति। पहले तो मेरे यही नहीं समझ में आता था कि additional, under इन सारे prepositions का क्या मतलब है।

मेरे Husband से मैं पूछती थी कि additional और under में क्या फर्क होता है? वो कहने लगे कि वैसे तुम्हारे पास बहुत ज्यादा अबल है लेकिन तुम तीन पत्ती नहीं खेल सकती, इसमें तुम्हें याद नहीं रहता कौन सी चीज़ Higher-lower है। ये तुम्हें ब्यूरोक्रेसी याद ही नहीं रहेगी। तो मैंने कहा साहब मुझे समझ ही में नहीं आता है कि इतने सारे Prepositions हैं, उसमें ऊपर नीचे क्या होता है। बहरहाल जो भी हो, तो वो बहुत मुझसे बिल्कुल दूर भाग के खड़ी हुई कि ये तो कोई क्लर्क की बीबी है या जो भी सोचा हो, पता नहीं। तो मैंने उनसे ये कहा कि भई ठीक है, मैं मीना बाग में रहती हूँ तो इतने नाराज़ होने की कोई बात नहीं है। जो सरकार ने हमें जगह दी है हम रहते हैं। तो कहने लगी कि, इतने में मेरे पति आ गए। अब तो भई यहाँ तो सब लोग नमस्कार कुर्सी को करते हैं, चाहे जो भी हो, तो वो आते ही साथ सब वो नमस्ते, नमस्ते, नमस्ते नमस्ते। तो ये भी उन्हें नमस्ते करने लगी। तो कहने लगी तुमने क्यों नहीं नमस्ते किया? वो तो मेरे पति हैं न, उनको क्या नमस्ते करनी। कहने लगी ये तुम्हारे पति हैं तुम मीना बाग में क्यों रहती हो? जैसे कि कोई वो यरवड़ा का जेल है कि मीना बाग। उसमें इतना objection क्या है? कहने लगी, ये तुम्हारे पति हैं! अरे तुम तो बड़े आदमी की बी-

हो। मैंने कहा मेरे लिए तो पता नहीं, पर जरा लम्बे हैं मेरे Husband। तो कहने लगी, तुम तो निरी गवार हो। तुमको तो वो फलानी जगह में कौंटी माँगनी चाहिए थी मैंने कहा काहे के लिए? तो कहने लगी वाह इतने बड़े आदमी हैं तो क्या तुमको बड़ी कौंटी नहीं चाहिए? मैंने कहा कि भई मुझे तो छोटा ही घर अच्छा लगता है, सफाई वफाई करने में मुश्किल ज्यादा नहीं होती। कहने लगी तुम्हारे घर में नौकर नहीं है, मैंने कहा, है पर उसको बहुत ज्यादा काम पड़ेगा न। तो बेहतर है छोटा ही घर अच्छा है। इस कदर यहाँ पर artificiality, ऊपरी तरह से बात, ऊपरी तरह से तामझाम। बस, उसके बाद तो वो समझ लीजिए कि वो मुझे रोज़ एक फोन करती थी। मैं तो परेशान हो गई। मैंने कहा इसको क्या हो गया भई ये? अभी तो ये मीना बाग से घबराती थी और वो रोज़ ही आने के लिए बैठी है मीना बाग, समझ ही में नहीं आता। इस तरह की चीज़ें जब मैंने देखीं तो मैंने सोचा कि यहाँ के लोगों का दिमाग, क्या हो जाएगा? गर समझ लीजिए कोई बिल्ली से आप कह दें कि आप घोड़ा हैं तो वो घोड़ा रहा एक तरफ तो वो बिल्ली क्या हो जाएगी ये बता दीजिए। वही हाल यहाँ के लोगों का है कि हर आदमी जो है वो अपने को पता नहीं क्या समझता है। और ये सब बाहर के लादे हुए गोबर के टुकड़े उनको लेकर के कौन सी शान बघारते हैं? ये तो कल गिर जाएगी। ये सब चीज़ गिर जाएगी, ये सब विनाशी चीज़ें हैं, इसमें रखा क्या है? आज बड़े कुर्सी पर बैठे हैं, कोई भी आदमी हो, कितना भी खराब हो, बस एकदम लोफर हो, कैसा भी हो, वो कुर्सी पर बैठा है, सब हाथ जोड़े खड़े हुए हैं! वो कोई प्रतिबन्ध है ही नहीं, किस तरह का आदमी कुर्सी पर बैठे? अच्छा और गर वो आदमी उस कुर्सी से उतर गया उसका सारा कच्चा चिट्ठा आप पूछ लीजिए। जब तक कुर्सी पर है वो तो समझ लीजिए भगवान से भी बढकर है। भगवान ही लोग उसको कहते हैं। आपको आश्चर्य होगा कि बहुत से लोग मेरे Husband को मिलने आते तो पूछते थे वो कि वो भगवान जी हैं? तो मैंने कहा कौन भगवान जी? साहब, श्रीवास्तव साहब। वो भगवान जी हैं, भगवान जी? तो, मैंने कहा फिर शास्त्री जी कौन हैं। कहने लगे, अरे वो परमभगवान हैं। आप कौन? मैंने कहा, यहाँ मैं नौकरानी हूँ। तो तब से मैं अपने पति को

भगवान जी चिढ़ाती हूँ। कहने लगे बस करो, आप मुझे मत चिढ़ाया करो। इस कदर का धमण्ड, इस कदर का जोर, इस कदर की ज़बरदस्ती और उसमें एक औरतों में जो एक विशेष रूप से एक विचार आता है, कि ओ, मैं इसकी पत्नी हूँ। मुझे तो ये भी नहीं पता था कि मेरे पति कहाँ, कितना, क्या उनकी position है और उन लोगों को तो सारी Civil list मालूम है कि इनका नम्बर इतना, तो उसका नम्बर इतना, तो उसका ये। मैंने कहा कि ये क्या घोड़े की list बना रहे हो या काहे की list बना रहे हो। ये किसलिए तुम इस तरह की बातें करते हो? और उन लोगों की बातें मुझसे समझ में मेरे आती नहीं थी, क्योंकि बैठे-बैठे discussion करती रहती थी इसको ये promotion मिला, उसको वो Promotion मिला। अच्छी भली पढ़ी-लिखी औरतें, educated। हम लोगों के साथ पढ़ी लिखी औरतें थीं वो अपना कुछ पढ़ना न लिखना न कुछ जानना न कोई बातें, बस ये कि पति की नौकरी कौन सी है। उसी के प्रकाश में मार अपने को.....। इस कृत्रिम जीवन से आप एकदम हट जाइए, इस कृत्रिम जीवन को एकदम आप छोड़ दीजिए। ये जो कुछ भी मेमसावियत है ये सब खत्म हो चुकी है। अब असलियत पर आना है क्योंकि हम सहजयोगी हैं। और सहजयोगी के लिए ये ज़रूर है कि कायदे के कपड़े पहने, कायदे से रहे, सुशोभित रहें। ये सब चीज़ ठीक हैं लेकिन अपनी सीमा में। अपनी सीमा में। और इस कृत्रिमता को जब आप हटाएँ तभी आप देखिएगा कि अन्दर वो शिवतत्व आपके अन्दर चमक रहा है। आपकी जो शान है वो देख रही है दुनिया, कहते हैं ना एक ऐसे एक साहब हैं। आप मिले हैं उनसे? आह क्या चीज़ है! फिर वो कुर्सी से उतरें या कुर्सी पर बैठें चाहे वो बाहर जाएं, चाहे वो अन्दर जाएं, सारी दुनिया उनके नाम से ही सोचेगी वाह क्या नाम दे दिया? ये सहजयोगियों की बात होनी चाहिए। एक ऐसा चरित्र होना चाहिए, एक ऐसा विशेष स्वरूप होना चाहिए कि जो कहें कि शिवजी जो थे ये, वो तो राक्षसों को भी क्षमा करते थे। इस प्रकार जिस शिवतत्व को हमने मान्य कर लिया और उनका क्षमा तत्व जब हमारे अन्दर बस गया तो हमें कोई सता ही नहीं सकता, कोई दुख ही नहीं दे सकता क्योंकि जब हमें याद ही नहीं रहा किसने क्या तकलीफ दी तो हमें कौन सा दुख होगा? इस

शिवतत्व में उतरने के लिए सबसे पहले आपको समझ लेना चाहिए, कि बिल्ली बिल्ली है, ये घोड़ा नहीं है और बिल्ली पर बैठा नहीं जाता है नहीं तो बिल्ली मर जाती है। ये नहीं सोचना है कि हम दिल्ली में रह रहे हैं तो हम कोई विशेष हो गए। जैसे ये सोच लिया ऐसे ही आपका जो है सारा चरित्र ही एक हास्यास्पद, Idiotic हो जाता है। एक और भी मजेदार बात है कि एक साहब minister साहब से मिलने गए एक साहब वहाँ बहुत क्रुद रहे थे, तो उन्होंने कहा, साहब आप इतना क्यों क्रुद रहे हैं? आपको पता नहीं मैं पी.ए. हूँ। उन्होंने कहा, अच्छा आप पीए हैं, अच्छा नमस्कार! ये तो पीए हुए आदमी हैं। तो इस प्रकार इस दिल्ली का बहुत अनुभव मुझे आया। और उस पर भी मेरे जैसी एक दो गवार औरते थीं, तो हमलोग बैठे-बैठे धर्म का चर्चा, इसकी चर्चा करते थे। बहुत कम, लेकिन अधिकतर सबमें ऐसी बातें। जो लड़कियाँ हमारे साथ कालेज में पढ़ती थी, इतनी सीधी, सरल, सादगी से रहने वाली, उनको पता नहीं एकदम उनके पर कैसे चढ़ जाते हैं? फिर हर चीज़ में ये मेरा घर है, एक गुर उनका नैपकिन खो गया तो वो सारे ब्रह्माण्ड को फोन करेंगी, भई तुम गलती से मेरा नैपकिन तो नहीं ले गए। अरे भई एक गया तो गया, चूल्हे में गया। एक किसी का चम्मच खो गया तो उसके लिए वो सारी दुनिया को फोन करेंगी कि भई वो एक मेरे यहाँ से चम्मच खो गया है, इन्हें शर्म भी नहीं आती। किसी चीज़ की, इतनी बेशर्मी से इस तरह की कंजूसी की बातें करना और ऊपर से आप लिपस्टिक लगाओ ये बनाओ अपना शृंगार करो और अन्दर से तो आप इतने टुच्चे, छोटे तबियत के लोग हैं। उनको क्या इतना महत्व देना, जो कि छोटी-छोटी चीज़ों के लिए, इतनी बरबाद चीज़ों के लिए परेशान हैं। कभी-कभी तो आश्चर्य हो जाता है कि किस तरह से ये लोग अपने को इतना बड़ा बनाकर दिखाते हैं और होते हैं कितने टुच्चे, कितने low level के। उनसे तो एक चीज़ नहीं छूटती, एक इतनी सी चीज़ किसी के पास रह जाए तो उनके प्राण निकल जाएंगे। वो सब अपने साथ ले जाने वाले हैं। तो शिवतत्व में जब हम अविनाशी चीज़ को सोचते हैं तो संसार की सारी चीज़ जो है वो हमारे लिए क्षण भंगुर है। किसी चीज़ का महात्म्य ही नहीं। उसके पीछे छिपी हुई या

उसमें अन्तर्निहित जो चेतना है उसी का प्यार है। जैसे मैंने आपसे बताया था कि मैं कश्मीर गई थी तो वहाँ पाँच मील दूरी पर मुझे vibrations आए, मैंने driver से कहा कि यहाँ से चलो, वहाँ से चलो। तो वो मुझसे कहने लगा, यहाँ तो कोई भी चीज़ नहीं, तो मैंने कहा नहीं चलिए यहाँ कुछ होगा जरूर। जाके देखा तो बहुत मुसलमानों के ऐसे छोटे-छोटे घर थे, आगे जाकर पूछा यहाँ क्या है? कहने लगे, यहाँ हज़रत इकबाल का एक बाल है। मेरे अब भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं, एक बाल, इकबाल, माने कौन मोहम्मद साहब, एक बाल वहाँ रखा हुआ था और पाँच छः मील पर मैंने उसे पकड़ा। इतने vibrations थे। आप सोच लीजिए एक बाल में क्या शक्ति होगी! इसी तरह से ये आपका जो आश्रम है, इसकी मिट्टी, पत्थर सीमेंट, फीमेंट जो भी लगा है, उसका महात्म्य नहीं है लेकिन इसके अन्दर बसे हुए मेरे बच्चों का महात्म्य है जिन्होंने अपनी मेहनत से प्यार से इसे बनाया और हर चीज़ इसका vibrate करी है। आगे लोग मेरा फोटो न मिले तो इसी के बाहर बैठकर के vibrations ले सकते हैं। तो ये आपके ऊपर निर्भर है कि जब आप इसके अन्दर आएँ तो याद रखें कि आप अपने शिवतत्व को जागृत करने आ रहे हैं, शिवतत्व पाने आ रहे हैं, उसी को जानने आ रहे हैं। और जिस आदमी में शिवतत्व होता है वो आनन्दमय, हँसता खेलता रहता है। जो लोग Serious होते हैं उनको रोज़ चाहिए अपने मुँह पर दो थप्पड़ मारें। क्योंकि मैं जब देखती हूँ तो मेरा ही मन करता है कि दो थप्पड़ इनको लगाऊँ। जब आपके अन्दर शिवतत्व जागृत हो गया है तो आप इतनी मनहूस शक्ल बनाकर क्यों आए हैं? और सवेरे से माफ़ करो, माफ़ करो, भई काहे की माफ़ करो। सवेरे से चलता है माफ़ करो, माफ़ करो, माफ़ करो। मैंने कहा देखो फिर से मत कहना माफ़ करो, नहीं तो एक लगाऊँगी। क्योंकि बात ये है कि हम लोग तो शिवतत्व को प्राप्त हैं और हमारे अंदर आनन्द की उदियाँ उठ रही हैं हम Serious कैसे हो सकते हैं? कोई हमारे घर में मातम हो रहा है कि कोई मर गया है? और ये भी एक बीमारी उत्तर हिन्दुस्तान में है खासकर आदमी लोग जब उनकी बीबी के साथ होते हैं तो देख लेना चाहिए, वो ऐसा मुँह लटका लेते हैं जैसे किसी पशुानी में चले जा रहे हों। कभी मैंने इधर के आदमियों को

औरतों से हँसते खेलते बोलते नहीं देखा। ज्यादातर तो कहते हैं हमारे भैया लोग जो यू.पी. के हैं कि आदमी आगे चलता है और बीबी घूँघट निकालकर दस कदम पीछे चलती है। वो बिचारी देखती चलती है कि उसका चमरोदा कहाँ जा रहा है उसके पीछे चलूँ। और आदमी लोगों को तो बीबी से बात करना किसी आप होटल में जाकर बैठिए, किसी रेस्तरां में बैठिए, वहाँ अगर आप देखिए कोई आदमी किसी औरत से बहुत बात कर रहा है तो समझ लेना चाहिए कि इसकी वो बीबी नहीं है, impossible! क्योंकि बीबी से बात करते वक्त उनको पता ही नहीं क्या बिच्छू काट जाता है कि साँप काट जाता है। और ये इतना common experience मैंने देखा है कि बीबी घर में है गर, उससे बात भी नहीं करने का, न उसे कहीं बाहर ले जाने का, उसे कोई companionship, नहीं। और शिव और पार्वती ये दोनों अटूट सम्बन्ध से बंधे हैं, जैसे चन्द्र और चन्द्रिका जैसे अटूट सम्बन्ध में। किसी और के साथ उनका सम्बन्ध चल ही नहीं सकता और आनन्द आ ही नहीं सकता क्योंकि स्त्री उनकी शक्ति है और यही कार्य करती है जो ये चाहते हैं। कितना आपस में मधुर उनका सम्बन्ध है और किस तरह से आदान-प्रदान और किस तरह से आनन्द! तो आदमी जो है वो हँसता खेलता रहे, औरते जो हैं वो भी हँसती खेलती रहें और आपस में बड़ा प्रेम और आनन्द आता रहे, उसे कहना चाहिए कि ये जो है ये शिव और पार्वती का (अस्पष्ट)। शिव अपने ढंग के हैं पार्वती अपने ढंग की हैं, शिवजी ये नहीं कहते कि तुम मेरे ढंग की हो जाओ और पार्वती ये नहीं कहती कि तुम मेरे ढंग के हो जाओ। न कोई जबरदस्ती, न कोई ये और आपस में एक तरह का बड़ा सा ही अच्छा (Love) जिसे कहते हैं, प्यार मनमुटाव चलते रहता है।

शिवतत्व से हमें ये भी समझना है कि जो विवाह हमारे अन्दर होते हैं वो तभी पूर्णतया सुखी हो सकते हैं जब पुरुष और स्त्री दोनों ही अपने आनन्द को प्राप्त करें। जब तक स्त्री ये सोचेगी कि मैं आदमी को कितना कब्जा करूँ और आदमी सोचेगा कि मैं अपनी औरत को कितने कब्जे में रखूँ तो उस वक्त में ये समझ लीजिए ये आनन्द खत्म हो जाता है। और इतनी बेवकूफी की बात है कि जब अपने सामने सब कुछ थाली भरकर रखा हुआ

है, सब आनन्द हमारे लिए पूरा भरा हुआ है और हम उससे अछूते ही रहें। आपस में जो सहजयोगियों का आपस में मेल-जोल है वो तो बहुत अच्छी बात है लेकिन अपनी गृहस्थी में भी इसी तरह से मेलजोल होना चाहिए। न कोई स्त्री पुरुष को dominate करे न पुरुष स्त्री को dominate करे, सब लोग अपनी अपनी जगह आनन्द में रहें। इसमें आपको ये भी है यहाँ औरतें इसलिए भी चिढ़ती हैं आदमी से बहुत, दिल्ली मैंने देखा, इनके पति काम में बहुत व्यस्त हैं। अब अगर आपके अन्दर शिवतत्व है, आपके हृदय में शिवतत्व है इस शिवतत्व से ही आनन्द मिलता है। गर आप चाहें अपने पति से, आप आनन्द तो नहीं पा सकती, उससे सुख पा सकती हैं, उससे अपने अहंकार को अपने पाल सकती हैं लेकिन पति से आपको आनन्द नहीं मिल सकता। आनन्द के लिए तो आप ही का अपना शिवतत्व है उसको पा लीजिए। तो फिर दुखी रहने की कौन सी बात है? गर उसको काम करना है, मेहनत करना है, हम तो अपने जीवन में आप बताएं तो आपको विश्वास ही नहीं होगा। जितने साल तक हम India में रहे हमारे पति ने एक भी छुट्टी नहीं ली, एक भी। वो भी इसलिए छुट्टी ली एक दिन, उस दिन मौलाना आजाद मर गए थे और सब चीज बन्द हो गई थी। लेकिन मैंने कभी शिकायत नहीं की, मैं अपने आनन्द में मग्न हूँ, मुझे क्या? वो तो अच्छा ही काम कर रहे हैं, देश का काम कर रहे हैं, मेहनत कर रहे हैं, तो काम करने दो और उनके काम की वजह से मुझे भी तो कितने लाभ हो रहे हैं, तो उनको बार-बार सताने से फायदा क्या? और तकलीफ देने से फायदा क्या? उल्टे अगर वो थके आए, उनको तकलीफ हो, उनको देखना चाहिए, उनको आराम देना चाहिए, उनको संभालना चाहिए। यही चीज हमारे यहाँ हो नहीं पाती है इसलिए भी आनन्द बढ़ता नहीं। औरतें तो दिन भर आराम करती हैं और शाम को चाहती हैं कि आदमी बारह एक बजे तक उनको घुमाते फिरें। सो इसमें आपको ये पता होना चाहिए कि आपको अगर पूरे रात भी घुमाए तो आपको आनन्द नहीं आने वाला क्योंकि आपका आत्मा ही जागृत नहीं है। आपका आत्मा जागृत जब हो जाए तो आपको इसकी जरूरत ही नहीं होती है। हम दोनों आदमी आज तक कभी

घूमने अकले नहीं गए, आपको आश्चर्य होगा, लेकिन कुछ मुझमें कमी नहीं हैं, मैं तो मस्त हूँ। मुझे कोई नहीं और उनमें भी कोई कमी नहीं है। गर ये चीज़ समझ ली जाए कि हमारी आत्मा से ही हम आनन्द को प्राप्त कर सकते हैं और जिस सुख को हम सोचते हैं वो विनाशी सुख है। तो जब तक आनन्द में रहना है आनन्द में रहो। ये चीज़ नहीं की, वो चीज़ नहीं की, ऐसा नहीं किया, दोनों का भी कहना ये दुख का कारण है। आज इसलिए मैं बता रही हूँ कि मनुष्य निसंग में आ जाए, निसंग में, बिल्कुल, कोई भी चीज़ उसको न रोके, जहाँ किसी भी चीज़ की लालसा, किसी भी चीज़ की इच्छा उसको न दबाए। तब कहना चाहिए कि वो सहजयोगी है। तब वो सहजयोगी हो गया। जहाँ वो किसी भी इच्छा से- पूरा नहीं, ये चीज़ नहीं हुई चलो दूसरी चीज़, वो चीज़ नहीं हुई चलो दूसरी चीज़, ऐसा जो मस्त रहता है आदमी उसको कहना चाहिए वो सहजयोगी है। और आशा है इस दिल्ली शहर में आप इस तरह के लोग तैयार होने वाले हैं और होएंगे क्योंकि अब हमारा आश्रम बन गया है और

आज इस शुभ अवसर पर हमने शिवतत्व को प्राप्त किया है जो आनन्द लोग देखकर के सोचें कि हाँ साहब आनन्द में है, और आनन्द की जो लहर होती है एक आपस में जो एक उसका फैलाव होता है, देखकर के मैं ही खुश हो जाती हूँ। मेरे बच्चे इतने आपस में खुश हैं, इतने प्रेम से बैठे हैं और एक दूसरे का मज़ा उठा रहे हैं। यानि जब इन लोगों की दोस्ती देखती हूँ तो ऐसा लगता है कि ये दिल्ली जो है अब बदल रही है। जहाँ पर दोस्ती नहीं, आपस में इसको काट, इसको खींच, इसको ये कर, एक को नीचा कर, एक को ऊपर कर, उस जगह ये दोस्ती का वातावरण और इतना शुद्ध, दोस्ती के लिए दोस्ती, प्यार के लिए प्यार, इससे बढ़के और माँ को कुछ नहीं चाहिए। ये जिस दिन हो जाए तो मैं कहूँ कि इस आश्रम बनाने का और मेरी जो मेहनत है उसका सब मुझे फल मिल गया। आशा है, आज आप अपने शिवतत्व को स्थापित करें।

परमात्मा आपको धन्य करें।

(मूल आडियो के अनुरूप)